अजित फाउण्डेशन
द्वारा प्रकाशित
मई 2025
वर्ष 5 अंक 9

अनुक्रमणिका

संपादकीय	3

कहानियां

मिठुआ की उलझन	सुकीर्ति भटनागर	4
बया चिड़िया	हरीशचन्द्र पाण्डे	7
मैं, एक खिलौना..	विकास विश्नोई	12
कुदरत की आवाज	पूनम पाण्डे	23

कविताएं

ग्रीष्म ऋतु	पदमा गोविन्द	09
नरेश चन्द्र	नटखट बंदर	09
मटका बाबा	डॉ. सत्यवान	10
मैं गुलाब...	महेन्द्र वर्मा	10
मैं मोबाईल	डॉ. राकेश चक्र	11
जामुन	सरिता पुरोहित	11
इंसान बने	डॉ. सतीश 'बब्बा'	13
चुहिया रानी	डॉ. प्रियंका सौरभ	14
रेल	पूर्णिमा मित्रा	14
खेले घर बाहर...	गौरीशंकर वैश्य	24

विविध

बच्चों का कोना	16 से 18	
बाल पहेलियां	रोचिका अरूण	15
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	19
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	20
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित

संपादक - संजय श्रीमाली

अप्रैल 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण अंकित चित्र राम भादाणी द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

जीवन में रचाव ही पहचान देता है

प्यारे बच्चों

कैसे हो ! कामना करता हूं कि सब अच्छे होगें। तो कुछेक के परीक्षा परिणाम आ गए होगें और कुछ के आने वाले होगें। आप सब नई क्लास में प्रवेश करने के लिए उत्हासित होगें। हो सकता है, आपको अच्छे अंक न मिले हो, लेकिन इससे हताश होने की आवश्यकता नहीं है, भविष्य में कड़ी मेहतन करें और समझे कि कहां और कैसे सुधार करना है। इससे आपको बहुत कुछ सीखने को मिलगा। खैर, इन सबको अभी विराम देते है। मैं अभी की बात कर रहा हूं "छुट्टियों" की। आप में से कुछ अपने शहर से बाहर घूमने का प्लान बना रहे होगें तो कुछ छुट्टियों में क्या नया सीखा जा सकता है उसके बारे में अपने साथियों के साथ चर्चा कर रहे होगें।

अगर आप बाहर घूमने जा रहें हो तो पूरे प्लान के साथ घूमने जाए। जिस स्थान पर जाना है उसके बारे में इंटरनेट से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करें। वहां के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थानों के बारे में जानकारी लेवे ताकि आप कोई महत्त्व का स्थान छोड़ न देवें। वहां के विशिष्टि खाने–पीने, दर्शनीय स्थान के बारे में भी जानकारी प्राप्त करे। इससे आपकी यात्रा सुगम एवं व्यवस्थित रहेगी। यात्रा के दौरान कैमरे या मोबाईल से फोटो भी लेते रहे तथा एक डायरी में उसके बारे में नोट भी करते रहे। यह यादें आपके जीवन में हमेशा आपको ताजा करती रहेगी।

दूसरा आप छुट्टियों में अपने आस–पास रूचिकर कक्षाओं में जा सकते है जैसे, संगीत, डांस, पेन्टिग, हैडराईटिंग आदि। इससे आपके व्यक्तित्व में निखार आयेगा तथा आपको कुछ नया सीखने को मिलेगा। अपनी रूचि के कार्यों में जब हम संलग्न होते है तो हमारे समय का सद्पयोग होता है। हमें जीवन में सदैव कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए, इससे हमारी रचनात्मकता का विकास होता है। और रचाव ही हमे जीवन में पहचान देता है।

संजय श्रीमाली

मिठुआ की उलझन

सुकीर्ति भटनागर

आज मिठुआ बहुत प्रसन्न है क्योंकि उसकी मेघना दीदी घर आने वाली हैं।वह उसकी सबसे प्रिय अध्यापिका हैं और उसे प्यार भी बहुत करती हैं। मिठुआ बंगाली परिवार से है, इसलिए दीदी जब भी आती हैं, उसकी मां से बंगला भाषा लिखना–पढ़ना सीखती रहती हैं। इस बीच वह भी खिली– खिली सी उनके आस– पास ही मंडराती रहती है। कभी– कभी तो दीदी हंसी– हंसी में उससे कह भी देती हैं, ‘ मिठुआ कुछ अपनी पढ़ाई– लिखाई भी कर लो, छिमाहि परीक्षा निकट ही है। प्रत्युत्तर में वह कुछ ना कहती, केवल मुस्करा कर कुछ देर के लिए अपने कमरे में चली जाती।

चित्र : रमेश शर्मा

सुबह के नौं बनजे वाले हैं, लगभग ग्यारह बजे तक दीदी आ जाएंगी। यह सोच मिठुआ जल्दी से नहा– धोकर तैयार हो गई और रसोई घर में दोपहर के भोजन की तैयारी करती मां का हाथ बटाने लगी। जिस दिन भी दीदी घर आतीं, मां उनकी पसंद के बंगाली व्यंजन बनाकर उन्हें खिलातीं। आज भी वह दाल– भात, बैंगन फ्राई और आलू– पोस्तो बना रही थीं। मिष्ठान में रसगुल्ले वह पहले ही बना चुकी थीं। दीदी जानती हैं कि मां के हाथों में तो मानो जादू है। इसलिए वह जब भी खाने बैठतीं, जी भरकर खातीं और भोजनोपरांत कुछ देर के लिए लेट जातीं। पर आज ऐसा नहीं हुआ। उन्हें दोपहर तीन बजे तक किसी अन्य कार्यक्रम में पहुंचना था, इसलिए फिर आने की बात कह, वह शीघ्र ही लौट गईं।

उनके जाने के पश्चात मां ने उससे कहा भी कि वह स्कूल से मिला अपना गृह– कार्य करले, पर उसने उनकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और देर तक मोबाइल पर अपने मनपसंद खेल खेलती रही, यद्यपि वह जानती थी कि दीदी ने ''झांसी की रानी'' पर लेख लिखकर लाने के लिए कहा है। उसके पिताजी ने भी एक– दो बार उसे अपनी पढ़ाई पूरी कर लेने के लिए कहा। परंतु उसने सोचा कि ऐसी भी क्या जल्दी है गृह– कार्य समाप्त करने की। शाम को या रात को सोने से पहले वह यह काम समाप्त कर लेगी। इस प्रकार उसने अपने माता–पिता द्वारा कही बातों को अनसुना कर दिया।

शाम को जब वह पढ़ने बैठी तो उसके मामा–मामी परिवार सहित अचानक उनके घर आ गए, जिन्हें देख वह खुशी से झूम उठी। अपनी ममेरी बहन वृंदा एवं भाई आशु से उसकी खूब पटती थी। इसलिए अपनी पढ़ाई– लिखाई को भूल वह उनके साथ खेलने में लग गई। रात्रि भोज के लिए उसके पिताजी सबको रेस्टोरेंट ले गए और वहां से लौटने के बाद देर रात तक गप–शप चलती रही।

सुबह स्कूल जाते समय मिठुआ को याद आया कि उसने अपना गृह– कार्य तो किया ही नहीं। पर अब क्या हो सकता था। स्कूल पहुंचकर वह हर दिन की भांति कक्षा मे ंसबसे आगे वाली सीट पर बैठ गई। दीदी ने आते ही पहले रोल–कॉल ली, फिर सभी को अपने गृह – कार्य की कापियां मेज़ पर रखने के लिए कहा। उनके आदेशानुसार सभी विद्यार्थी अपनी– अपनी कापियां दीदी की मेज़ पर रख आए। पर मिठुआ को कॉपी ना रखते देख दीदी ने उससे इसका कारण पूछा, तो उसने सहज भाव से अपने मामाजी के आने की बात उन्हें बता दी। तब दीदी कुछ क्षण उसे देखती रहीं और फिर दिया गया काम ना करने के लिए, उसे कक्षा से बाहर निकाल दिया और अन्य विद्यार्थियों को पढ़ाने लगीं।

बाहर खड़ी मिठुआ उनके इस व्यवहार से हतप्रभ थी। उसने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि दीदी इस प्रकार पूरी कक्षा के सामने उसे अपमानित कर सकती हैं। वह दीदी जिन्हे ंवह अपनी बड़ी बहन से ज्यादा प्यार करती है, वह दीदी जो उनके घर आकर सबसे कितने अपनेपन से हंसती– बोलती हैं और उसे तो विशेष रूप से पसंद करते हुए उसका ध्यान भी रखती हैं।

उन्होंने ही इतनी छोटी सी बात को लेकर उसे सबके सामने कक्षा से बाहर निकाल दिया, आखिर क्यों ? तभी क्लास समाप्त होने की घंटी बज गई

और दीदी कक्षा से बाहर आ गईं। मिठुआ ने आगे बढ़कर उनसे बात करनी चाही, पर वह उसे अनदेखा कर ऐसे आगे निकल गईं, मानों उसे जानती ही ना हों। आगे के कुछ दिन भी इसी प्रकार निकल गए। दीदी कक्षा में आतीं, पाठ पढ़ाती और चली जातीं। ना तो वह मिठुआ की ओर देखतीं और ना ही उसके अभिवादन का उत्तर देतीं। उनके इस उपेक्षापूर्ण व्यवहार से उसका कोमल मन आहत हो गया और इस स्थिति को लेकर वह कई प्रकार की उलझनों के जाल में उलझती गई।

वह रविवार का दिन था। दोपहर के ग्यारह बजे रहे थे। तभी मां ने उससे आकर कहा कि उसकी दीदी आई हैं और उसे बुला रही हैं। यह सुन वह मारे घ ाबराहट के पसीना– पसीना हो गई। आखिर क्यों बुला रही हैं वह उसे ? क्या अभी और डांट पड़ने वाली है ? अरे, क्या सोच रही हो, जाओ ना, कब से वह बुला रही हैं तुझे, उसकी मानसिक स्थिति से अनभिज्ञ मां ने कहा तो वह मुर्झाया चेहरा लिए धीरे–धीरे चलती बैठक में पहुंच गई, जहां दीदी बैठी थीं। आओ मिठुआ यहां बैठो मेरे पास, उसे देखते ही दीदी ने स्नेहिल स्वर में कहा तो उसे अपने कानो ंपर विश्वास ही नहीं हुआ और ना ही उनके पास बैठने का साहस। वह तो बस अपना सिर झुकाए चुपचाप उनके सामने खड़ी रही। यह देख दीदी गम्भीर स्वर में बोलीं, मैं जानती हूं कि मेरे बदले हुए व्यवहार को देखकर तुम असमंजस में हो। पर क्या तुम्हें पता है कि मैंने ऐसा क्यों किया ? केवल इसलिए कि तुम समय के महत्त्व को समझो। यदि तुम अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहती हो तो एक–एक पल के मूल्य को पहचानों। यदि तुम थोड़ा सा भी प्रयत्न करती तो उस दिन जो गृह– कार्य मैंने तुम्हें दिया था, उसे तुम पूरा कर सकती थीं। परतु मने अपने काम को गंभीरता पूर्वक नहीं लिया। सोचा होगा कि दीदी तो अपनी ही हैं, मुझे कुछ नहीं कहेंगी। पर ऐसा नहीं है। दीदी तो मैं घर पर हूँ, स्कूल में एक अनुशासन प्रिय और कर्तव्य परायण अध्यापिका, क्योंकि जीवन में हर रिश्ते का अलग–अलग स्थिति में अलग – अलग रूप होता है। समझी कुछ ? चलो आज तो तुम्हारी दीदी घर आई हैं, कुछ अच्छा हो जाए। पर कल स्कूल में तुम्हारी भेंट तुम्हारी अध्यापिका से ही होने वाली है, दीदी ने हंसते हुए कहा तो मिठुआ भी मुस्करा दी और मां द्वारा बनाए रसगुल्ले लेने रसोईघर की ओर चल दी। अब उसके मन की सारी उलझन समाप्त हो गई थी।

पता – 432, अर्बनएस्टेट, फेज़ 1,

पटियाला, पंजाब

बया चिड़िया

हरीशचंद्र पांडे

अमन और दादाजी सुबह की सैर कर रहे थे। मौसम बहुत सुहावना था। अचानक एक आम के पेड़ पर घोंसला देखकर अमन बोला। अरे, यह तो अनोखा सा घोंसला है दादाजी। किसका है यह ? ओह, यह, इसे देखकर हैरान हो गये हो। यह तो बया का घोंसला है। बया एक कारीगर और कलाकार पंछी है। इसका घोंसला तो अनोखा होता है। बबूल, बेरी अथवा ताड़ के वृक्षों पर लटके हुए ये घोंसले इतने मजबूत होते हैं कि तेज हवा के झोंके भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन इसे बनाने के लिए उसे काफी मेहनत करनी पड़ती है।

सर्वप्रथम नर पक्षी पौधों की छाल आदि को चीरकर उसके लम्बे–लम्बे रेशे तैयार कर लेता है। फिर उन्हें किसी वृक्ष की मजबूत टहनी से बाँध देता है। वह धीरे–धीरे ऐसे बहुत से रेशे लाता रहता है तथा घोंसले का बाहरी आवरण तैयार कर लेता है।

चित्र : अनिता शर्मा

बाहरी ढाँचा तैयार हो जाने पर मादा उसका निरीक्षण करने आती है। यदि वह घोंसला उसे पसन्द आ जाता है, तो वह नर के साथ जोड़ा बनाती है। इसके बाद दोनों मिलकर उसको पूर्ण करते हैं।

इस घोसले का दरवाजा नीचे की तरफ होता है। घोसले के भीतर एक गोल कोठरी बनायी जाती है जिसमें मादा अपने अंडे देती है। हवा के प्रवाह से घोसले उलट न जाएँ, इसलिए मिट्टी डालकर उसे वजनी बना दिया जाता है।

बया एक समझदार पक्षी है और अपने

परिवार की जरूरतों को समझती है। बया अपने घोंसले को दो भागों में बनाती है, एक रहने के लिए और दूसरा अण्डे देने के लिए। मजे की बात तो यह कि मादा बया एक बार जब कोई घोंसला पसन्द करके उसमें बस जाती है तो घ ोंसले की साफ सफाई तथा उसकी देखभाल बहुत ही समर्पित भाव से करती है।

देखो, गौर से देखो अमन ऐसा लगता है ना कि कितनी बुद्धिमानी से यह घोंसला तैयार किया गया है। दादाजी कहने लगे तो अमन ने गौर किया।

कभी–कभी पेडों पर उडते हुए जुगनू भी अपने आप इसमें आ घुसते हें और रात्रि में घोंसले को प्रकाशित करते रहते हैं। फोटो खींचने वाले आधी रात तक बया के घोंसले के पास रहते हैं ताकि जुगनू के आने पर यादगार फोटो ले सकें। और बया इन फोटो खींचने वालों से जरा भी नहीं डरती है। दरअसल यह हानिकारक और हानिरहित मित्र की पहचान कर लेती है।

बया का घोंसला बहुत ही कलात्मक होता है। शहरों में तो लोग इस घोंसले को अपने ड्राइंगरूम तथा संग्रह के कक्ष में लगाते है। एक ही पेड पर अनेक बया अपने घोसले बनाती हैं, पर आपस में लड़ती भी खूब हैं। बया को पालतू भी बनाया जा सकता है। वह बहुत जल्दी इन्सान से हिलमिल जाती है। उसे करतब सिखाने पर वह सीख जाती हैं बया एक मैदानी चिड़िया है हमारे देश में यह उत्तर पश्चमी क्षेत्रों में बहुतायत में पायी जाती है। इसे घने जंगलों की बजाय खुले मैदानों में रहना अधिक प्रिय है। जलाशय वाले स्थान तो इसे सर्वाधिक प्रिय हैं।

बया की अनेक प्रजातियँ हैं। सभी प्रजाति की बया झुण्ड में रहना पसन्द करती है इनकी लम्बाई लगभग छह इंच होती है। आमतौर पर इसका रंग पीला भूरा होता है। नर के ऊपर के पर काले होते हैं जिन पर काली भूरी धारियँ भी होती हैं। बया को भोजन में तरह–तरह क बीज खाना काफी अच्छा लगता है। वैसे यह झींगुर तथा अन्य छोटे–मोटे कीडे–मकोड़े भी बड़े चाव से खा लेती है समय आने पर मादा बया अण्डे देती है जो बिलकुल सफद होते हैं। एक बार में वह दो से चार अण्डे तक देती है। बया दिखने में तो बहुत छोटी है मगर इसका दिमाग बहुत तेज होता है। यह तेज हवा और ओले से अपनी रक्षा करना जानती है। मगर शहर के धुंए और प्रदूषण से वह खुद को बचा नहीं पा रही। आओ हम खूब वृक्ष लगाये और बया को बचाये रखें। बया तो कुदरत का अनमोल उपहार है।

पता – कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

ग्रीष्म ऋतु

पदमा गोविंद मोटवानी

चित्र – धीरज कच्छावा

सूरज दादा सिर पर चमके,
स्फेद–कण माथे पर दमकें।
गर्म हवा के थपेड़े लगते,
हाल होते बेहाल सबके।

कड़ी धूप में सभी सुलगते,
लता–पेड़ मुरझाने लगते।
हम घर के अंदर ही रहते
उछल कूद कर बंदर बनते।

आइसक्रीम, शर्बत खूब उड़ाते
आम रस से हम प्यास बुझाते।
सांझ ढले तालाब में तैरने जाते
खुश होकर मस्ती से गाने गाते।

रात में जब छत पर सोने जाते
चॉद तारों को हम दोस्त बनाते।
किस्से कहानियां सुनते सुनाते
बतियाते बतियाते हम सो जाते।

पता – गांधीधाम (कच्छ) गुजरात

चित्र – निकिता मारू

नटखट बन्दर

नरेश चन्द्र उनियाल

नहीं किसी से वह डरता है,
उछल कूद दिनभर करता है,
गली–गली ज्यों मस्त कलन्दर,
देखो तो वह नटखट बन्दर।

फलवालों को खूब रुलाता,
सारे फल वह चट कर जाता।
नहीं मिले यदि खाना इसको,
सीधे घुसता घर के अन्दर।।

काश पकड़ हम इसको पाते,
दादा जी से सजा दिलाते,
देख–देख कर हम सब हँसते,
रोता जब वो कान पकड़कर।

पता– पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मटका बाबा

डॉ. सत्यवान सौरभ

चित्र – राधिका जावा

माटी का तन, प्यारा रूप,
बैठे मटका, सहें न धूप।
कुम्हार ने चाक घुमा–घुमा,
प्यार से इसको दिया बना।

सूरज की किरणें जब पड़ती,
माटी की खुशबू तब बढ़ती।
घर–घर जब यह अंदर आता,
ठंडा जल सबको दे जाता।

गर्मी आई, प्यास जगी,
बच्चे भागे, माँ से कही।
ष्मटका बाबा पानी देंगे,
मीठा–ठंडा रस वो देंगे!।

मटका बोला– धीरे आओ,
बारी–बारी पानी पाओ।
गर्मी से अब डरना क्या,
पानी पी लो, चिंता क्या!।

दादी बोली– यही सच्चा,
मिट्टी जैसा कोई न अच्छा।
न बिजली, न गैस जलानी,
फिर भी रखे ठंडी पानी!।

मटका बोला– याद रखो,
माटी वाले बर्तन रखो।
प्लास्टिक छोड़ो, धरा बचाओ,
शुद्ध जल से जीवन पाओ।।

**पता – 333, परी वाटिका,
कौशल्या भवन, बड़वा (सिवानी)
भिवानी,**

मै गुलाब का फूल

महेंद्र कुमार वर्मा

चित्र – धनन्जय जोशी

मै गुलाब का फूल निराला
लाल गुलाबी भोला भाला।

अपनी रक्षा की खातिर ही
मैंने इन शूलों को पाला।

सुबह पंखुड़ी को नहलाती
आकर ओस सुंदरी बाला।

रंग बिरंगी तितली रानी
आती ओढ़े लाल दुशाला।

आता मेरा रूप देखने
शाम सवेरे भंवरा काला।

हवा सुहानी जब जब आती
खोले वो खुशबू का ताला।

मुझे देख कर सब खुश होते
ऐसा मेरा रूप निराला।

**बी–68 ओल्ड मिनाल रेसीडेन्सी
जे के रोड, भोपाल म.प्र.**

मैं मोबाइल

डॉ राकेश चक्र

मुझको बुरा न बोलो जी।
बच्चों को हाथों पकड़ाकर,
राज स्वयं ही खोलो जी।।

पैर नहीं हैं, हाथ न मेरे,
और नहीं आँखें मेरी।
क्यों मुझसे दिन भर ही चिपको,
देखें न दिन–निशि अँधेरी।

अपने गिरेबान में झाँको,
स्वयं तराजू तोलो जी।
मैं मोबाइल, हूँ मोबाइल,
मुझको बुरा न बोलो जी।।

फूहड़ सीरियल जब–जब देखो,
मन में कूड़ा भर लेते।
मैं न बिगड़ू , बच्चे बिगड़ें,
रोगों को आमंत्रण देते।

संयम, नियम ताक पर धरते,
कहाँ समय से सो लो जी।
मैं मोबाइल, हूँ मोबाइल,
मुझको बुरा न बोलो जी।

दोष स्वयं का मुझ पर डालें,
अपने अंदर झाँको जी।
बच्चे तो तुमसे ही सीखें,
बच्चों को तुम बाँचो जी।

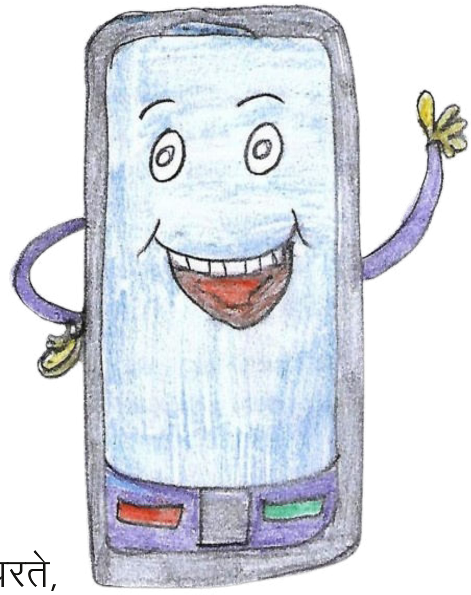

चित्र – सतीश स्वामी

समझें न जो समय की कीमत,
सिर पकड़ो और रो लो जी।
मैं मोबाइल, हूँ मोबाइल,
मुझको बुरा न बोलो जी।।

पता –90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद

जामुन

सरिता पुरोहित

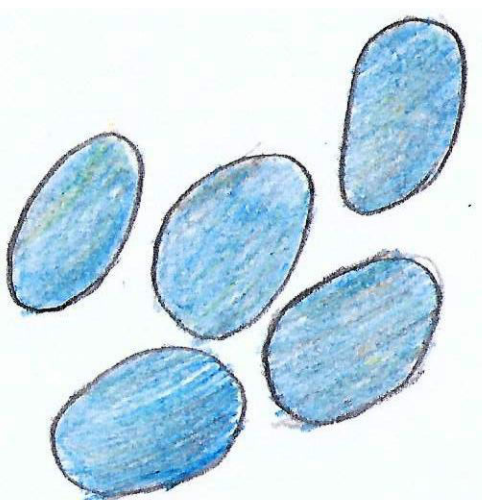

चित्र – राजेश व्यास

पेड़ बड़ा है जामुन का,
फल लगते छोटे–छोटे।
खटटे मीठे होते हैं,
गोल–गोल मोटे–मोटे

पूरे साल रहता रहा,
फूलों के खिलते गुच्छे।
हरे भरे से फूल सफेद,
शिव को अच्छे लगते।

लकड़ी बहुत टिकाऊ हैं,
नाव बनाया करते हैं।
अपच रोग जिनको होता,
जामुन खाया करते हैं।

**पता – मेड़ता सिटी,
राजस्थान**

मैं, एक खिलौना नहीं

विकास बिश्नोई

मैं एक छोटा–सा सफेद खरगोश हूँ। नरम रेशमी बालों वाला, मासूम आँखों से दुनिया को देखने वाला। मेरा नाम कभी किसी ने नहीं रखा, और शायद रखा भी होता तो कोई पुकारता नहीं। मेरी दुनिया एक टोकरी में सिमटी हुई है, जो अक्सर एक औरत के हाथ में होती है।

ये कहानी है मनाली की, उस बर्फीले पहाड़ की जहाँ हर चीज़ पर एक सफेदी की चादर सी बिछी होती है। लोग आते हैं वहाँ सैर–सपाटे को, तस्वीरें खिंचवाते हैं, हँसते हैं, और फिर चले जाते हैं। और मैं... मैं वहीं का वहीं रह जाता हूँ। उस औरत की हथेली में, जिसने मुझे एक तमाशा बना दिया है।

चित्र – विकास बिश्नोई

सुबह से शाम तक वो औरत मुझे अपनी गोद में लेकर खड़ी रहती है और कहती है, आ जाओ जी, सिर्फ़ 20 रुपए में फोटो खिंचवाओ प्यारे खरगोश के साथ ! लोग हँसते हैं, बच्चे चिल्लाते हैं। मम्मी खरगोश! मम्मी देखो, कितना क्यूट है!

कोई मेरी नाक को छूता है, कोई मेरे कान खींचता है। पर किसी ने कभी मेरी आँखों में झाँककर नहीं देखा... जहाँ ठंडी हवा से छलकते आँसू होते हैं। हर कोई स्वेटर, जैकेट, दस्ताने और टोपी में लिपटा होता है। और मैं ? बस एक नंगी जान हूँ, जिसे कोई महसूस ही नहीं करता। मेरे पाँव बर्फ पर ठिठुरते हैं, मेरा

दिल हर छूअन से कांपता है, पर मैं चुप हूँ... क्योंकि मैं एक 'खिलौना' हूँ ना!

शाम ढलती है, सूरज हिमालय की चोटियों में छिप जाता है। मैं सोचता हूँ। अब शायद घर जाकर चैन मिलेगा, गरमी मिलेगी। पर उस औरत ने मुझे न प्यार से उठाया, न कोई कंबल दिया। बस उसी पुराने लोहे के पिंजरे में डाल दिया जहाँ मैं रातें काटता हूँ। मैं कोने में दुबक जाता हूँ। बाहर का शोर बंद हो जाता है, पर मेरे दिल में एक सन्नाटा गूंजता है।

कभी सोचा है, जब खिलौना भी साँस लेता हो तो कैसा लगता है उसे खिलौना कहे जाना ? काश... कोई मुझे सिर्फ़ 20 रुपए का न समझता। काश... कोई मेरी ठंडी साँसें सुन पाता। काश... मैं सिर्फ़ एक तस्वीर का हिस्सा नहीं, किसी के प्यार का हकदार होता। मैं भी जीना चाहता हूँ... खुले मैदानों में दौड़ना, हरी घास में लोटना, किसी की गोद में चैन से सोना। बिना कैमरे, बिना पैसों के... बस दिल से। मैं एक खिलौना नहीं हूँ। मैं भी महसूस करता हूँ क्योंकि मैं भी एक ज़िंदा दिल हूँ।

पता :- हिसार (हरियाणा)

इंसान बनें

डॉ. सतीश 'बब्बा'

चुन्नू से,
मुन्नू ने कहा,
आओ चलो,
भगवान बनें!

चुन्नू ने,
मुन्नू से कहा,
हम क्यों,
भगवान बनें!

चुन्नू ने कहा,
भगवान को,
किसी ने,
देखा है क्या!

हम क्यों,
सबसे दूर रहें,
मम्मी–पापा,
भगवान से बड़े!

चुन्नू की बात,
मुन्नू समझ गया,
दोनों ने,
संकल्प लिया!

प्रकृति के,
रक्षक बनकर,
हम सब,
इंसान बनें!!

पता– चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

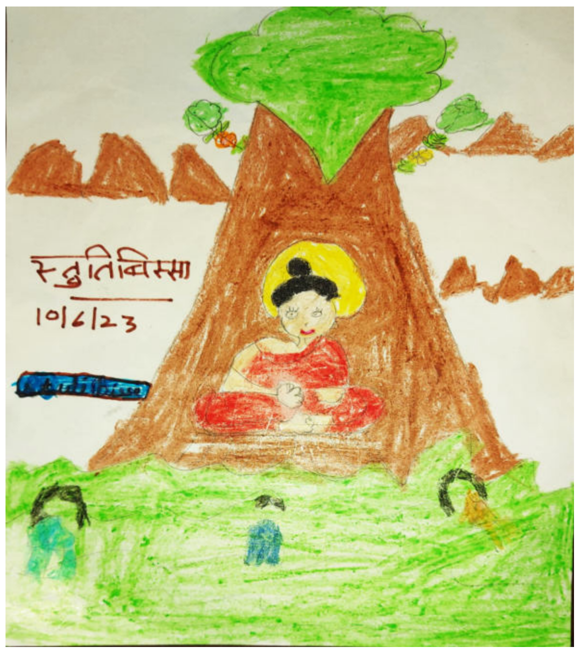

चित्र – स्तुति बिस्सा

चुहिया रानी

प्रियंका सौरभ

चित्र – निरंजन

चुहिया रानी छोटी सी,
दुम हिलाए मोटी सी।
काली आंखें, गुलाबी नाक,
देखे उसको हर कोई झांक।

पहन रखी थी लाल चुनरिया,
प्यारी सी वो बनी दुलरिया।
रसोई में जा घुसी छुपाकर,
दूध मलाई चखी लजाकर।

आ गई अम्मा लेकर झाड़ू,
चुहिया भागी बोली 'भागूं!'
दीवारों में सुराख बनाई,

बाहर आई फिर मस्ती छाई।
बच्चे बोले– देखो देखो,
चुहिया रानी आई देखो!
हम देंगे ताजा रोटी,
मक्खन, गुड़ और मीठी मोटी।

चुहिया बोली– "ठीक है भैया,
पर मत लाना कोई छैय्या।
मैं नाचूंगी, गाऊंगी गीत,
पर मत करना कोई भी चीट!"

बच्चों ने फिर जाल बिछाया,
रोटी संग गुड़ भी दिखलाया।
चुहिया बोली– "प्रेम दिखाओ,
पर मेरा भय दूर हटाओ।"

नन्हे मन की भोली भाषा,
सच्चे प्यार में बसी आशा।
चुहिया रानी मित्र बन गई,
हर आँगन की शान बन गई।

**पता – उब्बा भवन,
आर्यनगर, हिसार
(हरियाणा)**

रेल

पूर्णिमा मित्रा

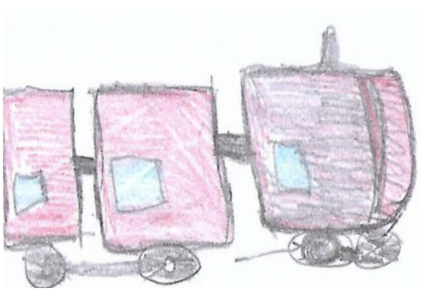

चित्र – माणक सुथार

हम बच्चों के निराले खेल,
छुक छुक करती चली रेल
पिंटू बना हुआ है इंजन,
इसके पीछे खड़ा है रंजन।
सभी शामिल हो सकते है,
लौटा देता है यह बचपन।

बिन पैसे मन में उल्लास भरता,
बच्चों में हर भेदभाव मिटाता।
हमें एकता का सबक पढ़ाता,
बिन पैसे अनमोल खुशी बांटता।

बीकानेर

बाल पहेलियां

रोचिका अरुण शर्मा

जड़ों वाली सब्ज़ियाँ

1

दिखे
कड़क ये
भूरी–काली,
छीलो चिकनी खुजली वाली।
सूखी या रस की पकायें,
पत्तों से पात्रा
बनायें।

2

कंदमूल की जब हो
बात,
गाँठ की सब्जी आये याद।
मिनरल, फाइबर का भण्डार,
खाएं हर दिन बना
सलाद।

उत्तर

1–अरबी
2– शलजम
3–प्याज
4–मूली

3

कंद अनोखा
परतोंदार,
छीलो काटो आंसूधार।
सलाद–सब्जी हो दमदार,
फसल वर्ष में दो–दो
बार।

4

मीठा–तीखा इसका
स्वाद,
लाल–सफ़ेद रंग सलाद।
जड़–पत्ते सब्जी तैयार,
पराठे सर्दी में
दमदार।।

पता – चैन्नई

बच्चों का कोना

सेजल सिंह, रायबरेली

दिव्यांशी, बीकानेर

दिक्षा कूकणा, लूणकरणसर

स्तूति बिस्सा, बीकानेर

अयानदास, मुम्बई

महक रील, बीकानेर

जितेन्द्र राठी, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

संजय पुरोहित

ब्रुनेइ

कैसे हो दोस्तों ? उम्मीद करते हैं कि आप गर्मी में भी पढ़ाई कर रहे हैं। मौसम तेज गरमी का होने वाला है। आप सब अपना बहुत ख्याल रखियेगा। खूब पानी पीना है। दोपहर को यदि बाहर निकलना पड़े तो कैप, चश्मा पहन कर ही निकलना है। इस तरह से हम गर्मी से खुद को बचा कर रख सकते हैं। अरे ! कहां तो हम देशों की यात्राएं कर रहे थे और कहां हम आपको गर्मी से बचाव के तरीके बताने लगे। लेकिन ये भी जरूरी है। तो चलिये हमारी यात्रा का अगला पड़ाव शुरू करते हैं। वैसे फ्रेण्ड्स ये तो आपने नोट किया ही होगा कि दुनिया भर में ऐसे देश हैं जहां कि अपनी खुद की कुछ रोचक बातें होती है। ऐसे ही किसी और देश की यात्रा के लिये हो जाईये तैयार। तो आज चलते हैं साउथ ईस्ट एशिया के देश ब्रुनेई की सैर पर।

साभार – www.www.brightsun.co.uk

ब्रुनेई बोर्नियो के नॉर्थ किनारे पर बसा हुआ देश है। इसका आधिकारिक नाम ब्रुनेई दारूस्सलाम है। यह पूरी तरह से मलेशियाई स्टेट सारावक से घिरा हुआ है। चीनी और अरबी रिकॉर्ड के

अनुसार यह सातवीं और आठवीं शताब्दी में ब्रुनेई नदी के तट पर स्थित था। पहले यह अलग अलग कम्पनियों द्वारा शासित किया जाता था। 1888 में यह ब्रिटेन के अधीन आ गया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जापानी कब्जे के बाद नया संविधान बना। फिर बाद में ब्रुनेई पर ब्रिटिश संरक्षण खत्म हो गया तथा एक जनवरी 1984 को ब्रुनेई पूरी तरह से संप्रभु राज्य

साभार – www.career-advice.jobscom

बन गया। यहां पर एक सदनीय विधायिका, विधान परिषद् है। इन सभी को सुल्तान ही नियुक्त करते हैं। ब्रुनेई की आधिकारिक भाषा मलय है। अंग्रेजी भी यहां पर काफी बोली जाती है। यह मालदीव, सिंगापुर तथा बहरीन के बाद सबसे छोटा एशियाई देश है। लगभग पांच लाख की जनसंख्या वाला यह छोटा सा देश सबसे अमीर मुस्लिम देशों में गिना जाता है। यहां पर राजतंत्र है। सुल्तान ही यहां के सबसे बड़े मुखिया कहे जाते हैं। ब्रुनेई का सबसे बड़ा शहर बंदर सेरी बेगावान है। यही ब्रुनेई की राजधानी भी है। ब्रुनेई एक मुस्लिम देश है। ब्रुनेई में आज भी महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं है। लेकिन महिलाओं के प्रति सम्मान खूब है। ब्रुनेई के घरों में दीवारों पर पत्नियों की तस्वीर लगाई जाती है। यह भी बात कम रोचक नहीं कि यदि किसी के दो पत्नी है तो उन दोनों की तस्वीरें दीवारों पर लगाई जाती है। अब बात ब्रुनेई के सुल्तान की।

ब्रुनेई के सुल्तान को दुनिया का सबसे रईस राजा माना जाता है। उनकी सम्पत्ति की कीमत लगभग 1364 अरब रूपये है। ब्रुनेई के सुल्तान को गाडियों का इतना शौक है कि उनके कलेक्शन में सात हजार कारें हैं। बिल्कुल ठीक पढा आपने सात हजार कारें हैं। उनकी प्राईवेट गाड़ी तो सोने से जड़ी हुई है। ब्रुनेई के सुल्तान जिस महल में रहते हैं उसमें 1700 से ज्यादा कमरे हैं। इस महल का नाम 'इस्ताना नरूल इमान महल' है। ब्रुनेई के सुल्तान की कारें दुनिया भर में प्रसिद्ध है। उनका महल और कारों का कलेक्शन

साभार – www.www.happyviaggithailandia.com

समृद्ध होता जा रहा है। ब्रुनेई स्टिल्ट बस्तियों का घर कहा जाता है। इसका कारण यह कि यहां एक हजार साल से भी पहले से स्थापित कम्पोयर अवैंग में स्टिल्ट गांव है, जिनमें तीस हजार लोग रहते हैं। इसे पूर्व का वेनिस का उपनाम भी दिया गया है। ब्रुनेई का झण्डा सन 1906 में अपनाया गया। उमर अली सैफुददीन मस्जिद यहां का प्रसिद्ध स्थल है। इसका गुम्बद 3.5 लाख मोजेक पत्थरों से बना हुआ है। इस पर असली सोने की पत्तियां लगाई हुई है। ब्रुनेई का सत्तर प्रतिशत हिस्सा जंगलों से ढका हुआ है। यहां दुलर्भ प्रजाति के जानवर पाये जाते हैं। पैंगोलिन, सूंड वाला बंदर, सुन्डा क्लाउडेड तेंदूआ, हॉर्नबिल आदि ब्रुनेई में पाये जाते हैं।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हे। ब्रुनेई में पब्लिक प्लेस पर शराब पीना मना है। यही नहीं यहां पर सड़क पर चलते चलते कुछ खा पी नहीं सकते। यहां के लोग फास्ट फूड को बिल्कुल पसंद नहीं करते। ब्रुनेई के सुल्तान ही नहीं बल्कि ब्रुनेई के नागरिकों को भी गाड़ियों से बेहद मुहब्बत है। यहां जितने लोग रहते हैं उससे ज्यादा तो कारें हैं। उसका कारण यह भी है कि यहां तेल ज्यादा होने के कारण तेल की कीमतें बहुत कम है और परिवहन टेक्स भी लगभग ना के बराबर देना पड़ता है। यह जानकर भी आपको आश्चर्य होगा कि ब्रुनेई में किसी नागरिक को इनकमटेक्स नहीं देना पड़ता। ब्रुनेई अपनी सम्पदा का बेहतर करना जानता है। यही कारण है कि यह देश लगातार

तो कैसी लगी छोटे से देश की छोटी सी यात्रा ? उम्मीद है आपको पसंद आई होगी। अगले अंक में चलेंगे किसी और देश की सैर को। तब तक के लिये बॉय बॉय।

पता –सूरसागर के पास, बीकानेर

कुदरत की आवाज

पूनम पांडे

एक बार एक आदतन शिकारी अपने तीर–कमान लेकर शिकार करने निकला, पर इस दफा कोई बड़ा जानवर उसके हाथ नहीं लगा। वह सिर्फ एक छोटा सा खरगोश ही पकड़ सका। शिकारी खरगोश को घोड़े पर लादकर वापस लौट गया। लौटते समय वह अपने वतन का रास्ता भूल गया। एक लड़का पेड़ नीचे बैठकर चिड़िया चुगा रहा था। शिकारी ने उस लड़के से पूछा, ''क्या तुम मेरे गांव का रास्ता बता सकते हो ? लड़के ने कहा, मैंने दो ही रास्ते सुने हैं, एक नर्क का, जो तुम्हारे जैसे बेरहम लोगों को बिना किसी से पूछे मिल जाता है। दूसरा नेकी का, जो स्वर्ग की ओर जाता है। तुम्हें जिस पर जाना हो, बिना पूछे चले जाओ। शिकारी के मन को यह बात चुभ गई। उसे लगा यह बालक की नहीं शायद कुदरत की ही सच्ची आवाज है। उसने खरगोश को नजदीक की झाड़ी में स्वच्छंद घूमने–फिरने के लिए फिर से छोड़ दिया और फिर कभी शिकार न करने की कसम खाई।

चित्र – राम भादाणी

खेलें घर बाहर के खेल

गौरीशंकर वैश्य 'विन्रम'

चलो! हरीश, रमेश, बघेल।
खेलें घर बाहर के खेल।

बाबा जी ने बतलाया है
गेम वीडियों अति दुखदायी,
इससे समय नष्ट हो जाता
ठीक से होती नहीं पढ़ाई,

आँखों को नुकसान पहुँचता
गंदी लत, जाओगे झेल।

दौड़ – भाग से चुस्ती आती
हो जाता अच्छा व्यायाम,
खुले पार्क में खुलकर खेलें
थक जाएं, कर लें आराम,

चित्र – शारदा

तन–मन ठीक से विकसित होगा
आपस में पनपेगा मेल।

हॉकी, क्रिकेट. छुपम–छुपाई
खो – खो. लंगड़ी या फुटबॉल,
चोर – सिपाही, गिल्ली – डंडा
नभ में करे पतंग धमाल,

अक्कड़ – बक्कड़ साथ जमाएँ
आँख – मिचौली और गुलेल।

स्टॉपू, कोड़ा जमाल छू
कंचा, रस्सीकूद, गोलियाँ,
रंगबिरंगी चिड़ियाँ देखें
बोलें उन्हीं की भाँति बोलियाँ,

हल्ला – गुल्ली धूम मचाएँ
कभी चलाएँ छुकछुक रेल।

कमरे में यदि बंद रहेंगे
मिलती धूप, न शुद्ध हवा,

घर के बाहर जाकर खेलें
यही स्वास्थ्य की उचित दवा,

पारम्परिक खेल अपनाकर
दुष्प्रवत्ति पर कसें नकेल।

पता – 117 आदिलनगर,
विकासनगर

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

साभार www.naidunia.com

प्यारे बच्चों, गर्मियों में जब हम छत पर सोते है और अंधेरी रात को जब हम आकाश को देखते है तो हमे आकाश बहुत आकर्षित नजर आता है। यह नजारा अगर आप शहर से दूर गांव या जहां रोशनी कम हो वहां से देखते है तो आकाश हमें गहरा काला एवं अनगिनत तारे टिमटिमाते नजर आते है। तथा तारों के टूटने एवं कई अन्य ग्रह स्पष्ट रूप से नजर आते है।

मई में आकाश काफी अच्छा नजर आता है क्योंकि इस समय ज्यादा बादल नहीं होते है तथा आसमान काफी हद तक साफ होता है। आपको अच्छा उल्कापात देखना है तो आप दिनांक 6 एवं 7 मई को एटा एक्वारिड्स उल्कापात देख सकते है। एटा एक्वारिड्स एक औसत से ऊपर की बौछार है, जो अपने चरम पर प्रति घंटे 60 उल्काएं पैदा करने में सक्षम है। अधिकांश गतिविधि दक्षिणी गोलार्ध में देखी जाती है। उत्तरी गोलार्ध में, दर प्रति घंटे लगभग 30 उल्काओं तक पहुँच सकती है। यह धूमकेतु हैली द्वारा छोड़े गए धूल के कणों से उत्पन्न होता है, जिसे प्राचीन काल से देखा जाता रहा है। यह बौछार प्रतिवर्ष 19 अप्रैल से 28 मई तक चलती है। इस वर्ष यह 6 मई की रात और 7 मई की सुबह चरम पर होती है। बढ़ता हुआ गिबस चंद्रमा इस वर्ष कुछ हल्के उल्कापिंडों को रोक देगा। लेकिन यदि आप धैर्यवान हैं, तो आपको अभी भी कुछ उज्जवल लोगों को पकड़ने में सक्षम होना चाहिए। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं कुंभ राशि

साभार www.mpanchang.com

से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

जैसा कि आपको मैंने पहले भी बताया था कि माह में एक दिन पूर्णिमा होती है तथा उसके 15 दिन बाद अमावस्या। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पूरा होता है एवं अमावस्या के दिन आसमान में चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है। इस माह 12 मई को पूर्णिमा है। चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। इस पूर्णिमा को प्रारंभिक अमेरिकी जनजातियों द्वारा फ्लावर मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह वर्ष का वह समय था जब वसंत के फूल प्रचुर मात्रा में दिखाई देते थे। इस चंद्रमा को कॉर्न प्लांटिंग मून और मिल्क मून के नाम से भी जाना जाता है।

वहीं दिनांक 27 मई को अमावस्या है। इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 03:04 यूटीसी पर होता है। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

प्रतिमाह हम किसी न किसी ग्रह को साफ एवं अच्छा देख सकते है। इस माह

साभार www.jansatta.com

दिनांक 31 मई शुक्र को स्पष्ट रूप से देखा जा सकात है। शुक्र महानतम पश्चिमी विस्तार पर आप देख सकते है।। शुक्र ग्रह सूर्य से 45.9 डिग्री के अधिकतम पूर्वी विस्तार पर पहुँचता है। यह शुक्र को देखने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह सुबह के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्योदय से पहले पूर्वी आकाश में चमकीले ग्रह को देखें।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(11 मई 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	4:55	17:42	11:18	दुर्बल
शुक्र	03:36	15:49	09:42	अच्छा
मंगल	11:27	00:57	18:22	अच्छा
गुरू	07:56	21:45	14:50	अच्छा
शनि	03:22	15:15	09:18	सामान्य
यूरेनस	06:13	19:42	12:58	सामान्य
नेपच्यून	03:26	15:27	19:27	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते हैं। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com